ISSN 2321-4945

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

वर्ष : 8 ❖ अंक : 10 ❖ जनवरी, 2017

68वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अनुराग

सारे जहां से अच्छा,
हिंदुस्तां हमारा।

एक हृदय हो भारत जननी

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

[केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित]

सलाहकार

श्री हरिकांत नाथ
डॉ. अच्युत शर्मा
डॉ. ताराकांत झा
श्री गोलोक चंद्र नाथ
श्री धीरेन चंद्र शर्मा
श्री विष्णु कमल तामुली

संपादक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया
(मो. 9435340285)

कार्यकारी संपादक

रामनाथ प्रसाद
(मो. 9435147126)

शब्द-संयोजन व अलंकरण

रति कांत कलिता

वार्षिक शुल्क : दो सौ रुपये
अर्द्धवार्षिक : सौ रुपये
एक प्रति : बीस रुपये

प्रकाशक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया
की ओर असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
गुवाहाटी-781032

'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के हैं। संपादक या प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लेखादि भेजने का पता :
संपादक, द्विभाषी राष्ट्रसेवक
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
रूपनगर, गुवाहाटी-781 032
फोन : (0361) 2462811, 2463394
फैक्स : 0361 - 2463394

Postal Rgd. No. GH-127/2016-2018

ISSN 2321-4945

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का
साहित्य-कला-संस्कृति विषयक मासिक मुख-पत्र

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

वर्ष : 8 | जनवरी-2017 | अंक : 10

विषय-सूची

हिंदी विभाग

- सामयिकी — 2
- जमातिया हॉदा बनाम स्त्री — डॉ. मिलन रानी जमातिया — 3
- हिंदी और असमीया का अंत:संबंध भाषा और साहित्य के संदर्भ में — डॉ. अनुशब्द — 9
- हिंदी भाषा : अतीत, वर्तमान और भविष्य — सुनीता राम — 15
- रस के शिकारी कुबेरनाथ राय — मुहम्मद इसराईल अंसारी — 18
- श्रम का महासंगम (कविता) / अव्याख्येय (कविता) — डॉ. हेमराज मीणा 'दिवाकर' — 20
- समिति समाचार — 21

অসমীয়া বিভাগ

- শ্ৰীষ্টমাছৰ মাহাত্ম্য — কামিনী দেৱী — ২৯
- হৈ থাকিব চিৰযুগমীয়াৰে ব'হাগ বিহুৰে বিহুৱান (কবিতা) — ড° জেচিম ৰাজা — ৩২

लेखक/लेखिकाओं से अनुरोध : • 'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' के लिए भेजे जाने वाले लेखादि साहित्य, कला, संस्कृति विषयक होने चाहिए। • भेजे गये लेखादि साफ अक्षरों में या टाइप कराकर ही भेजें। • अनूदित लेखों के लिए मूल लेख का उल्लेख करना अनिवार्य है।

हिंदी और असमीया का अंत:संबंध

(भाषा और साहित्य के संदर्भ में)

❖ डॉ. अनुशब्द ❖

भारत एक बहुजातीय देश है। यहां कई सारी भाषाई जातियों एवं संस्कृतियों का एक लंबे अर्से से सहअस्तित्व रहा है। भाषाई विविधता यहां की पहचान है। पूरे भारत में लगभग 1652 भाषाएं बोली जाती हैं। इन सभी भाषाओं को चार भाषा परिवारों - आर्य भाषा परिवार, द्रविड़ भाषा परिवार, कोल या मुंडा भाषा परिवार और नाग भाषा परिवार के अंतर्गत रखा गया है। इन भाषाओं का संबंध विभिन्न भाषा परिवारों से है। हिंदी और असमीया को अनुसूचित भाषाएं होने का गौरव प्राप्त है। हिंदी की गरिमा और महिमा से तो हम सब वाकिफ हैं। संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में तो उसका अखिल भारतीय वर्चस्व है। साथ ही आजकल विदेशों में भी हिंदी व्यापक रूप से स्वीकृत है। अब यदि हम असमीया भाषा की बात करें तो समग्र पूर्वोत्तर भारत में इसकी एक विशिष्ट पहचान है। यह असम की राजकीय भाषा है। सुखद संयोग यह है कि हिंदी और पूर्वोत्तर भारत की एकमात्र भाषा असमीया दोनों ही आर्य भाषा-परिवार के अंतर्गत आती हैं। इस पारिवारिक एकता के कारण ही हिंदी और असमीया में घनिष्ठ अंत:संबंध है। केवल भाषा के स्तर पर ही नहीं, साहित्यिक संवेदना के स्तर पर भी। यही वजह है कि आज पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी और असमीया के रचनाकारों का तुलनात्मक अध्ययन शोधार्थियों की पहली पसंद बन गयी है। तेजपुर विश्वविद्यालय की ही बात करें तो यहां फिलवक्त 'मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी', 'मोहन राकेश और अब्दुल मलिक', 'कमलेश्वर और भवेंद्र नाथ शइकिया', 'बाबा नागार्जुन और भूपेन हजारिका', 'मन्नू भंडारी और इंदिरा गोस्वामी', 'प्रेमचंद और रजनीकांत बरदलै' आदि रचनाकारों पर पीएचडी स्तर पर तुलनात्मक दृष्टि से शोध कार्य किये जा रहे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा और साहित्य दोनों ही स्तरों पर हिंदी और असमीया के बीच काफी रागात्मक संबंध है। इस भाषाई समानता और साहित्यिक सौहार्द का एक बड़ा कारण दोनों भाषाओं की परिवारगत एकता तो हैं ही, साथ ही भौगोलिक दृष्टि से इनकी निकटता और श्रीमंत शंकरदेव तथा माधवदेव के जमाने से इनका आपसी सहचर्य भी है।

अब यदि भाषा के स्तर पर हम देखें तो ध्वनि से लेकर वाक्य तक हर स्तर पर इन दोनों भाषाओं में पर्याप्त संबंध एवं समानता है।

भाषा के स्तर पर हिंदी और असमीया में अंत:संबंध

1. ध्वनि-स्तर पर संबंध, 2. शब्द-स्तर परसंबंध
3. वाक्य-स्तर परसंबंध

1. ध्वनि-स्तर पर अंत:संबंध :

(i) सघोष महाप्राण ध्वनियों जैसे - घ्, ध्, भ् आदि का प्रयोग हिंदी और असमीया दोनों ही भाषाओं में समान रूप से होता है।

अनुशब्द